International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 33-35

पारिवारिक विघटन के बीच जूझती नारी अस्मिता

कीर्ति भारद्वाज

शोध छात्रा, गौतम बुद्ध विश्व विद्यालय, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सरांश

सभ्यता के विस्तार तथा सामाजिक संरचना के अधिकाधिक जटिल हो जाने के कारण भारतीय नारियों की आकांक्षा में भी परिवर्तन आया है तथा सभ्यता के विस्तार तथा सामाजिक संरचना के अधिकाधिक जटिल हो जाने के कारण भारतीय नारियों की आकांक्षा भी अब जटिल एवं उलझी हुई हो गई हैं। दाम्पत्य जीवन में नारी कुछ भी करने को तैयार हो जाती है क्योंकि वह नहीं चाहती कि उसके पति के साथ संबंध टूट जाए। इसलिए वह अपने पति द्वारा दिए गए अपमान को भी चुपचाप सहन कर लेती है क्योंकि वह अपने दाम्पत्य जीवन में तालमेल बैठाना चाहती है।

मूल शब्द: नारी, पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य जीवन।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में स्त्री का जो भी स्थान रहा है परन्तु सृष्टि की रचना में नारी का योगदान पुरुषो के योगदान से कहीं अधिक है। मानव की जन्मदात्री होने के नाते ही नही, मातृत्व की उदारता के कारण भी हमारे यहां प्रत्येक युग में मातृ–पद की प्रतिष्ठा निर्विवाद रही है। माँ, पत्नी, बहन, प्रेमिका आदि रूपों से हटकर स्त्री के अस्तित्व, निजत्व, उसके मानवीय रूप या एक मानव के नाते उसकी भूमिका को लेकर देश–विदेश की स्त्री में कहीं कोई बुनियादी अंतर नजर नही आता पर व्यक्तिगत स्तर पर नारी मनोविज्ञान का अध्ययन करें तो संसार में एक आश्चर्यजनक समानता मिलेगी। यह समानता ही विश्व भर में एक स्त्री को दूसरी स्त्री से जोड़ती है और उसे पुरुष के प्रति दृष्टिकोण विशेष से अलग नहीं करती।

एक प्रसिद्ध मराठी कवयित्री हिंदी मल्लिका अमर शेख काफी कुछ यह वह करती है स्त्री स्वाधीनता को अपना एक अँधा आइना मानती है। वे कहती हैं कि:–

> ''औरतें करती हैं साफ अपने बदन को
> जैसे कोई मुर्गी को छीलता है सपाटे से।
> कपड़े धोती है घर साफ करती है, स्वेटर बुनती है
> काफी कुछ यह वह करती है'' ।।[1]

अर्थात पुरुष समाज हमेशा से ही स्त्री पर अधिकार जमाता रहा है। चाहे यौनेच्छा की पूर्ति हो, दहेज की मांग हो या फिर उसके सम्मान की बात हो। वह अपनी मनमानी के लिए स्त्रियों पर अत्याचार करने लग गया है आज स्त्रियों के साथ बलात्कार, घरेलू हिंसा, छेड़छाड़, हत्या जैसे घटनाएं पुरुषों की ही देन हैं।ये सभी अपराध पुरुषों द्वारा ही किए जाते हैं परन्तु अपमानित नारी को ही होना पड़ता है। स्त्रियों के प्रति, दुराचार, हिंसा आधुनिक युग से ही नही बल्कि प्राचीन काल से ही होती आ रही है। बाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड के 48 वें प्रसंग तथा 49 वें सर्ग में अहिल्या का प्रसंग आता है। वह गौतम ऋषि की पत्नी होती है। उसका आश्रम मिथिला के ही उपवन में ही स्थित है। वहां पति–पत्नी दोनों तपस्या करते हैं। एक दिन गौतम ऋषि की अनुपस्थिति में इंद्र उन्हीं का वेश धारण करके आश्रम में आता है और अहिल्या को अपना परिचय देकर उससे रति–सुख की इच्छा करता है। जब गौतम ऋषि उन्हें एक साथ देखकर शाप देते हैं कि ''हे दुराचारिणी! तू इस जंगल में कई हजारों वर्षों तक हवा–पानी पीकर या उपवास करके पत्थर की मूर्ति बनकर जीवित रहेगी'' ।[2] इंद्र का प्रकरण नदारद है अर्थात मेरा मकसद कहानी सुनाना नही है बल्कि मेरा उद्देश्य यह बताना है कि पुरुष को अपराधी घोषित नहीं किया गया परन्तु अहिल्या को शक के कारण पत्थर की मूर्ति बन कर रहना पड़ा केवल अहिल्या ही नही बल्कि प्राचीन वाङ्गमय में अनेक स्त्रियों के आख्यान सुरक्षित हैं, जो आज के परिप्रेक्ष्य में स्त्री–विमर्श के सामने उतपन्न यौन–वर्जनाओं की कुंठा के समाधान सुलझा सकते हैं। जरूरत केवल इस बात की है कि इन आख्यानों के ऊपर से पुरुषवादी वर्चस्व की मानसिकता का कलेवर उतार कर फेंक दिया जाए। इस प्रकार हम देखते है कि सीता, सावित्री, अनुसूया, दमयंती द्रोपदी आदि नारियों के चरित्र मार्ग–प्रशस्त करने वाले हैं। मगर अफसोस, पुरुष मानसिकता को स्त्रियों के दोहन के लिए सामाजिक, नैतिक और धर्मसम्मत वैधानिक अधिकार का पोषण करने वाले यही चरित्र भारतीय महिलाओं की चेतना पर सवार हैं। पुरानी सामाजिक व्यवस्था को आज समाज किसी न किसी रूप में ओढ़े हुए हैं। पुरुषों ने अपना सर्वस्व सिद्ध करने के लिए अपने अनुसार नियम व आदर्श स्थापित कर लिए और वह स्त्री का देवता बन गया और पुरुषों ने नारियों को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया।

भारतीय समाज अपने पारम्परिक आदर्शों एवं धार्मिक मूल्यों के गौरवपूर्ण संगम स्थल रहे। आजादी पूर्व भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार की विसंगतियां उतपन्न हो गई थी जैसे सती प्रथा पर्दा प्रथा, बाल विवाह,दहेज प्रथा, अनमेल विवाह आदि इन विसंगतियों से टककर लेना नारी के वश की बात नही थी। आजादी की लहर जब देश में फैल गई तब समाज सुधारकों की दृष्टि नारी उत्थान की ओर गई तथा उन्होनें इन समस्त विसंगतियों को अवैध घोषित करके इन्हें समाप्त करने का प्रयास किया। समाज की परिवर्तनशीलता ने नारी के व्यक्तित्व को प्रभावित किया है। स्त्रियों में शिक्षा के विकास के कारण आत्मविश्वास पैदा हुआ है। वर्तमान समय में नारी के सामने आर्थिक स्वावलंबन आने लगा तथा नारी आत्मनिर्भर होते हुए अपनी स्वतंत्रता की मांग करने लगी।

स्त्रियों की शिक्षा में अभूतपूर्वक प्रगति के कारण उनमें आत्मनिर्भरता की वृद्धि भारत सरकार द्वारा स्त्रियों के अधिकारों से संबंधित कानूनों का निर्माण, अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिलवाने की दिशा में अथक प्रयत्न आदि

ने स्त्रियों को यह सोचने के लिए अवसर दिया है कि उसका भी समाज में स्वतंत्र अस्तित्व है। इस विचार ने स्त्री को पुरुष की एकाधिकार वादी प्रवृति का विरोध करने के लिए प्रेरणा दी। वस्तुतः इस तरह नारी अस्मिता की तलाश समाज में शुरू हुई और जब नारी को ही पारिवारिक विघटन का ही मुख्य कारण माना जाने लगा परन्तु वास्तव में ऐसा नही है। स्वतंत्रता के बाद भारत की राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में बदलाव आ गया।यह बदलाव भारतीय समाज की आधारशिला परिवार को विघटित करने का कारण बन गया।

माना कि समाज में परिवार का अपना एक विशिष्ट महत्व है।यहां रिश्तों की प्रधानता है। समाज को विस्तृत तथा जीवित रखने का कार्य परिवार द्वारा ही सम्भव है। डा० ज्ञानवती अरोड़ा के अनुसार, ''परिवार ही वह बिंदु है जिसके माध्यम से व्यक्ति और समाज को समझा जा सकता है परिवार के बिना व्यक्ति समाज के लिए अपरिचित है और समाज के बिना व्यक्ति का कोई अस्तित्व नही है''।।[3] वास्तव में परिवार की गतिशीलता का आधार विवाह है। विवाह के बाद ही पति–पत्नी मिलकर अपना एक परिवार बनाते हैं जिसमें माँ–बाप बेटा बेटी भाई– बहिन होते हैं उसी गृहस्थी को घर–परिवार का नाम दिया जाता है।

जब परिवार इतने लोगों से मिलकर बनता है तो उसकी पूरी जिम्मेदारी एक नारी पर ही क्यों थोपी जाती है ?क्या उसका अपना वर्चस्व नही है ?क्या उसकी अपनी इच्छाएं नहीं है ?आखिर क्यों परिवार में सभी समस्याओं की वजह औरत को माना जाता है ?इसका मुख्य कारण तो यही है कि हमारा समाज पितृसत्तात्मक है पुरुष को ही सारे अधिकार प्राप्त हुए हैं। पुरुष को ही सारे अधिकार प्राप्त हुए हैं॰ महिला के पास केवल कर्तव्य हैं। पितृसत्तात्मक परिवार में वंश पिता के नाम से चलता है और पुरुष का नारी पर अधिपत्य रहता है। आज संयुक्त परिवार खत्म होते जा रहे हैं। आधुनिक काल में नारी भी पुरुष के समान अर्थोपार्जन करती है। समाज में होने परिवर्तनों के कई कारण होते हैं जिनसे परिवार हमेशा प्रभावित रहता है और परिवार में होने वाले परिवर्तनों के कई कारण होते हैं। शहरीकरण जहाँ–जहाँ शहरीकरण शुरू होता है, वहां कर्मचारियों के लिए रहन–सहन की व्यवस्था, अस्पताल, डाक घर, बैंक, यातायात की सुविधाएँ आदि की स्थापना हुई। जीवन सुविधाएँ बढ़ने के कारण ज्यादातर लोग शहरो में आने लगे। इसलिए लोग गावों को लेकर छोड़कर सिर्फ अपनी पत्नी और बच्चों को साथ लेकर रहने लगे इस प्रक्रिया के फलस्वरूप संयुक्त परिवार का विघटन हो गया। कानून व्यवस्था– कानून व्यवस्था ने स्त्रियों को सम्पत्ति पर अधिकार, बाल विवाह पर रोकथाम, अंतर्जातीय विवाहों की स्वीकृति, नाबालिग बच्चों के सम्पत्ति संबंधी अधिकारों के प्राप्त होने के कारण परिवार के सदस्य अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गए और परिवार विघटित हो गए।

नारी शिक्षा–आजादी के बाद भारत में नारी शिक्षा का बड़ा प्रचार हुआ शिक्षा–प्राप्ति के कारण उन्हें पुरुषों के बराबर अपने अस्तित्व का अहसास हुआ। आर्थिक स्वतंत्रता मिलने के कारण स्त्रियों में व्यक्तिवादी भावना जाग उठी अतः नारी शिक्षा तथा जागृति ने नारियों को स्वावलम्बी बनाने के साथ स्वार्थी भी बना दिया जो पारिवारिक विघटन का कारण है। डा एम .एल. मेहता कहते हैं, ''परिवार टूटने में व्यक्ति का अपनी वैयक्तिकता की ओर ध्यान देना प्रमुख कारण है''।।[4] अर्थात जब सदस्यों के बीच एकता तथा प्रेम का अभाव हो तब पारिवारिक विघटन का कारण बनता है। अनमेल विवाह–कहा जाता है विवाह जन्मों का बंधन है लेकिन जब इसी बंधन को बंधन को तोड़ने के लिए बाहर संबंध बनाये जाते हैं, तब परिवार में संघर्ष उत्पन्न होता है। डॉ छाया देवी घोरपडे के अनुसार, ''विवाहित स्त्री या पुरुष जब किसी अन्य स्त्री या पुरुष की ओर आकर्षित होते हैं तो इसके पीछे उनकी दमित इच्छाएं होती ''।।[5].

बदलते स्त्री–पुरुष संबंधों के इस युग में भी अनेक पुरुष किसी हीन मनो ग्रंथि के शिकार लगते हैं। वह अजीब बात है कि पुरुष अपने लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करता है, पर स्त्री को पूर्ण स्वतंत्रता देने के पक्ष में नही है। पुरुष को अपनी पत्नी के अलावा और किसी भी स्त्री के साथ संबंध रखने का अधिकार है मगर पत्नी अगर किसी पुरुष के साथ बातचीत भी करे तो उसे बर्दाश्त नही होता। इस तरह जब पति–पत्नी के झगड़े इतने बढ़ जाते हैं और कई बार दुर्भाग्य से इस उलझन में उसकी मदद करने के लिए परिवार का कोई भी सदस्य नही रहता तो परिणामस्वरूप पति–पत्नी के बीच संघर्ष उत्पन्न हो जाता है।ऐसी हालत में नारी को घुट–घुट कर जीना पड़ता है और कभी–कभी विवाह–विच्छेद भी हो कर परिवार विघटित हो जाता है।

अतः यह जरूरी नही है कि यदि परिवार विघटित हो रहा है तो इसके पीछे नारी ही नहीं बल्कि अन्य कारण भी जिम्मेदार हैं। राजनीतिक सामाजिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में होने वाले मूल्य विघटन विश्व के प्रत्येक भाग में चल रहे हैं। मूल्य एक ऐसी बीमारी है जिनसे परिवार ही नहीं बल्कि समाज भी प्रभावित हो रहा है अर्थात यह कहें कि सामाजिक मूल्य विघटन तथा पारिवारिक मूल्य विघटन एक दूसरे के पूरक हैं।यदि परिवार सुसंगठित तंदरुस्त हो तो समाज भी स्वस्थ होगा क्योंकि परिवार से ही समाज का निर्माण होता है

यदि नारी की वास्तविक स्थिति को समझा जाए तो नारी को आधुनिक काल में सभी अधिकार प्राप्त हैं। उसे कमाने का अधिकार है, परन्तु उस कमाई पर खर्च करने का अधिकार नही है। उसे अपने पति की इजाजत लेकर खर्च करना है। परिवार में बच्चा पैदा करने से लेकर उसके पालन–पोषण की जिम्मेदारी स्त्री की ही है लेकिन बच्चे की पढ़ाई तथा उसकी शादी ब्याह जैसे निर्णय लेने का अधिकार केवल उसके पति को ही है। इस प्रकार नारी दोहरे दर्जे की जिंदगी व्यतीत करती है॰ कहने का अभिप्राय यह है की जब सारे निर्णय लेने का अधिकार ही उसके पति का है तो नारी को ही पारिवारिक विघटन का ही दोषी क्यों समझा जाता है।

दिवेदी जी ने नारी की वास्तविक स्थिति को कितनी सुन्दर पंक्तियों में प्रकट किया है ?

> ''पति को देवतुल्य हम माने बच्चो की भी दासी हैं,
> सेवा सदा करे नही सोचे भूखी है या प्यासी है
> हे भगवान !हाय तिस पर भी उपेक्षा कैसे पाती है,
> ढोल तुल्य ताड़न अधिकारी हम बनाई जाती है''।।[6].

इस समाज में स्त्री के प्रति क्रूरता दिखप्ने को पुरुषों ने पुरुषत्व की संज्ञा दी है और स्त्री को पिटते और दबे रहने की संज्ञा स्त्रीत्व की स्त्री के प्रति असामाजिक अनाचारों को जायज ठहराने का एक तर्क यह भी दिया जाता जाता है कि स्त्री जैविक रूप से दब्बू है जबकि पुरुष में पाशविकता प्राकृतिक रूप से होती है। अतः स्त्री पर क्रोध आने से उत्तेजित होने पर पुरुष का हिंसक हो उठना स्वाभाविक है। अमेरिका के प्रसिद्ध यौन शास्त्री किंसी ने अपनी प्रसिद्ध रिपोर्ट में ''इस धारणा को खारिज करते हुए पुरुषों में व्याप्त हिंसक मानसिकता को गलत ठहराया तथा इसे सामाजिक परिवेश तथा

आज नारी शिक्षित एवं जागरूक हैं।यदि वह अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा रही है तो पुरुषों को भी अपनी अहम भावना त्याग कर स्त्री जाति का सम्मान करना चाहिए। सही मायनों में कहा जाए तो पारिवारिक विघटन का मूल कारण पत्नी नहीं बल्कि पति–पत्नी का आपसी मतभेद है। अतः पारिवारिक विघटन का दोष

स्त्री पर ही न थोपा जाए बल्कि पति–पत्नी के संबंधों को स्वस्थ रखा जाए तथा जरूरत हो तो मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रियों की भी सलाह ली जा सकती है तथा पारिवारिक विघटन को रोका जा सकता है क्योंकि समाज की अनिवार्य संस्था परिवार है। परिवार में रिश्तों की प्रधानता है तथा परिवार मानव जाति में आत्म संरक्षण, वंशवर्धन और जातीय जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने का प्रधान साधन है। अतः समाज को विस्तृत तथा जीवित रखने का कार्य परिवार ही कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रेरणा–अरुण तिवारी, पृ 15, प्रताप नगर, जयपुर, संस्करण 2004।
2. बाल्मीकि रामायण गीता प्रेस गोरखपुर, 13 वां संस्करण।
3. समसामयिक हिंदी कहानी में बदलते पारिवारिक संबंध– डॉ ज्ञानवती अरोड़ा– पृ 73. सूर्य प्रकाशन. नई सड़क, दिल्ली–6 संस्करण– 1992।
4. स्वतंत्रोत्तर हिंदी कहानी वस्तु विकास एवं शिल्प विधान डॉ. विवेकी रॉय, पृ 60, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1970।
5. साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में परिवर्तित नारी जीवन मूल्य, छाया देवी घोरपडे पृ 112 राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली संस्करण 1992।
6. डॉ. महावीर प्रसाद दिवेदी रसज्ञ रंजन पृ 90, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 1972।
7. स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, मृणाल पांडे, पृ 66 राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 1957।